

NEXT IAS

दैनिक संपादकीय विश्लेषण

विषय

भारत की FDI कहानी में एक जटिल मोड़

www.nextias.com

भारत की FDI कहानी में एक जटिल मोड़

संदर्भ

- भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) का प्रवाह निरंतर बना हुआ है, लेकिन लाभ की प्रत्यावर्तन, विनिवेश, और भारतीय कंपनियों द्वारा विदेशों में निवेश की बढ़ती प्रवृत्ति ने दीर्घकालिक विकास प्रभाव को कमजोर कर दिया है।
- भारतीय रिज़र्व बैंक ने इस दोहरी प्रवृत्ति को भारत की बाह्य स्थिरता के लिए जोखिम के रूप में चिन्हित किया है।

प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) के बारे में

- **परिभाषा:** FDI वह निवेश है जो किसी विदेशी संस्था द्वारा किसी अन्य देश के व्यवसाय या उत्पादन क्षमता में प्रत्यक्ष रूप से किया जाता है।
- **प्रकार**
 - इक्विटी भागीदारी
 - संयुक्त उद्यम
 - सहायक कंपनियों की स्थापना
 - ग्रीनफील्ड परियोजनाएँ
- **अंतर:** FDI, पोर्टफोलियो निवेश से अलग होता है क्योंकि यह दीर्घकालिक पूंजी, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण, और प्रबंधन विशेषज्ञता प्रदान करता है।

भारत में FDI की प्रवृत्ति

- **FY 2024–25 में भारत ने \$81 बिलियन का FDI आकर्षित किया**, जो विगत वर्ष की तुलना में लगभग 14% की वृद्धि है।
 - 2011 से 2021 के बीच प्रवाह लगभग **दोगुना** हुआ, जो भारत की निवेश आकर्षण क्षमता को दर्शाता है।
 - लेकिन FY 2021–22 के शिखर के पश्चात से शुद्ध FDI प्रवाह में तीव्र गिरावट आई है।
 - सकल प्रवाह (महामारी के बाद): \$308.5 बिलियन
 - प्रत्यावर्तन/विनिवेश: \$153.9 बिलियन
 - शुद्ध पूंजी (FY 2024–25): केवल \$0.4 बिलियन
- **प्रमुख क्षेत्रीय प्रवृत्तियाँ**
 - निर्माण क्षेत्र का भाग घटकर कुल FDI का मात्र 12% रह गया है।
 - वित्त, आतिथ्य और ऊर्जा वितरण जैसे सेवा क्षेत्र प्रवाह में प्रमुखता से शामिल हैं, हालांकि, उनमें विनिर्माण या बुनियादी ढांचे के गुणक प्रभावों का अभाव है।
 - यह दर्शाता है कि निवेशक त्वरित वित्तीय लाभ को प्राथमिकता दे रहे हैं, जो प्रायः सिंगापुर और मॉरीशस जैसे टैक्स हेवन के माध्यम से आता है, बजाय रणनीतिक या प्रौद्योगिकी-आधारित निवेश के।
- **बढ़ता भारतीय बाह्य निवेश (Outward FDI)**
 - FY 2011–12 में \$13 बिलियन से बढ़कर FY 2024–25 में \$29.2 बिलियन हो गया है।
 - कंपनियाँ घरेलू स्तर पर नियामक अक्षमता, बुनियादी ढांचे की कमी, और नीतिगत अनिश्चितता के कारण विदेशों की ओर अपना दृष्टिकोण कर रही हैं।

- इससे घरेलू पूंजी निर्माण, रोजगार सृजन, और औद्योगिक प्रतिस्पर्धा कमजोर होती है।

भारत के FDI से जुड़े अन्य प्रमुख मुद्दे

- सतत FDI के लिए संरचनात्मक बाधाएं: सुधारों और रैंकिंग में सुधार के बावजूद, भारत को नियमों की अस्पष्टता, असंगत कानूनी और नीतिगत ढांचे, तथा शासन संबंधी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।
 - ये समस्याएँ निवेशक विश्वास को कमजोर करती हैं और विनिवेश व पूंजी पलायन को बढ़ावा देती हैं।
- व्यापक आर्थिक प्रभाव: FDI प्रवाह भारत के बैलेंस ऑफ पेमेंट्स, मुद्रा स्थिरता, और मौद्रिक नीति की लचीलापन के लिए महत्वपूर्ण है।
 - शुद्ध FDI में गिरावट से बाह्य खाता प्रबंधन पर जोखिम बढ़ता है।
 - भारतीय रिज़र्व बैंक ने इस दोहरी प्रवृत्ति को दीर्घकालिक आर्थिक स्थिरता के लिए चिंताजनक बताया है।
- भू-राजनीतिक और वैश्विक चुनौतियाँ: अमेरिका, ब्रिटेन, यूएई और जर्मनी जैसे प्रमुख देशों से FDI प्रवाह में गिरावट आई है।
 - अमेरिका की नीतिगत परिवर्तन और चीन में आर्थिक प्रोत्साहन से भारत जैसे उभरते बाजारों से पूंजी का विचलन हो सकता है।
- टैक्स हेवन पर अत्यधिक निर्भरता: FDI का बड़ा हिस्सा मॉरीशस (25%) और सिंगापुर (24%) के माध्यम से आता है, जिससे पारदर्शिता एवं स्थायित्व को लेकर चिंताएँ हैं।
 - ये मार्ग प्रायः कर अनुकूलन के लिए उपयोग किए जाते हैं, न कि दीर्घकालिक औद्योगिक निवेश के लिए।
- नीति क्रियान्वयन में अंतर: राष्ट्रीय एकल खिड़की प्रणाली और जन विश्वास अधिनियम जैसे सुधारों के बावजूद निवेशक अभी भी शिकायत करते हैं:
 - कर प्रवर्तन की अनिश्चितता
 - अनुबंध प्रवर्तन की कमजोरी
 - धीमी नियामक स्वीकृतियाँ
 - ये समस्याएँ भारत की विश्वसनीय निवेश गंतव्य की छवि को प्रभावित करती हैं।

भारत में FDI को बढ़ावा देने के प्रयास

- क्षेत्रीय सीमा का उदारीकरण: दूरसंचार, बीमा मध्यस्थ, कोयला खनन, और अनुबंध निर्माण जैसे प्रमुख क्षेत्रों में 100% FDI (स्वचालित मार्ग) की अनुमति।
 - रक्षा क्षेत्र में 74% FDI (स्वचालित मार्ग) की सीमा नई औद्योगिक लाइसेंस के लिए बढ़ाई गई।
- मेक इन इंडिया और राष्ट्रीय निर्माण मिशन: घरेलू निर्माण को बढ़ावा देने और विदेशी पूंजी आकर्षित करने के लिए।
 - मेक इन इंडिया 2.0 के अंतर्गत 27 रणनीतिक क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित, जैसे: इलेक्ट्रॉनिक्स, फार्मास्यूटिकल्स, और वस्त्र।
- व्यापार सुगमता (Ease of Doing Business): 2014 से 2019 के बीच भारत की रैंकिंग 142 से बढ़कर 63 हो गई।
 - जन विश्वास कानून और जन विश्वास 2.0 जैसे प्रयासों से व्यापार कानूनों का अपराधमुक्तिकरण और अनुपालन को सरल बनाया गया।

- डिजिटल परिवर्तन और एकल खिड़की स्वीकृति: राष्ट्रीय एकल खिड़की प्रणाली(NSWS) का कार्यान्वयन — तीव्र स्वीकृतियों के लिए
 - FDI अनुमोदन प्रक्रियाओं और निवेशक शिकायत निवारण का डिजिटलीकरण।
- उत्पादन-आधारित प्रोत्साहन (PLI) योजनाएँ: 14 क्षेत्रों में लक्षित प्रोत्साहन, जैसे: सेमीकंडक्टर्स, चिकित्सा उपकरण, और तकनीकी वस्त्र।
 - भारत की वैश्विक प्रतिस्पर्धा को बढ़ाने और आयात पर निर्भरता को कम करने के लिए डिज़ाइन की गई।

आगे की राह

- भारत को एक स्थायी वैश्विक निवेश केंद्र में परिवर्तित करने के लिए आवश्यक है कि वह:
 - दीर्घकालिक पूंजी को प्राथमिकता दे, न कि अल्पकालिक सट्टा प्रवाह को।
 - नियमों को सरल बनाए और नीतिगत स्थिरता सुनिश्चित करें।
 - बुनियादी ढांचे और संस्थानों में निवेश करें ताकि निवेशकों का विश्वास सुदृढ़ हो।
 - मानव संसाधन विकास पर ध्यान दें ताकि उन्नत निर्माण, स्वच्छ ऊर्जा और प्रौद्योगिकी को आकर्षित किया जा सके।
 - FDI को राष्ट्रीय लक्ष्यों के साथ संरेखित करें ताकि उसका विकासात्मक प्रभाव सुनिश्चित हो।

Source: TH

दैनिक मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

प्रश्न: भारत में शुद्ध प्रत्यक्ष विदेशी निवेश में हाल की गिरावट में योगदान देने वाले कारकों पर चर्चा करें, और इस प्रवृत्ति के देश के दीर्घकालिक आर्थिक विकास और निवेशक विश्वास पर पड़ने वाले प्रभावों का मूल्यांकन करें।

